विचार बिन्दु

हमें शांति के लिए उतनी ही बहादुरी से लड़ना चाहिए, जितना हम युद्ध में लड़ते हैं। - लाल बहादुर शास्त्री

डेंगू से बचाव की आशा की किरण है एंटीडेंगू मच्छर

दुनिया के देशों के लिए इसे शुभ समाचार माना जा सकता है कि डेंगू से बचाव के लिए इस साल डेंगू मच्छर का खात्मा करने वाले एंटीडेंगू मच्छर को दुनिया के करीब 14 देशों में छोड़े जाने का निर्णय किया गया है। देश दुनिया में डेंगू के मामलें तेजी से बढ़ते जा रहे हैं। वैज्ञानिकों द्वारा प्रयोगशाला में एंटीडेंगू मच्छर का सफल प्रयोग किया जा चुका है और ब्राजील में बड़ा केन्द्र बनाते हुए बोल्वाशिया मच्छर का उत्पादन आरंभ कर दिया गया है। हांलाकि किन किन 14 देशों में एंटी डेंगू मच्छरों को छोड़ा जाएगा यह निर्णय विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा अभी किया जाना है। पर एक बात साफ हो चुकी है कि डेंगू पर समय रहते रोक अभियान चलाया जाना आवश्यक है। क्योंकि डेंगू अब किसी देष की सीमा में बंधा नहीं रह गया है। एक मोटे अनुमान के अनुसार दुनिया के 129 देशों या यों कहें कि दुनिया की आधी आबादी क्षेत्र में डेंगू अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुका है। देश दुनिया की सरकारों और विश्व स्वास्थ्य संगठन के सामने डेंगू बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। दरअसल डेंगू की गंभीरता को देखते हुए ही गैर सरकारी वर्ल्ड मास्कीटों प्रोग्राम के तहत एंटीडेंगू मच्छर विकसित किया गया है। 2023 में इंडोनेशिया में इनका प्रयोग किया जा चुका है और इनके प्रभाव से 95 प्रतिशत तक सकारात्मक प्रभाव देखा गया है। हांलाकि 2011 में आस्ट्रेलिया के क्वींसलैंड में लगातार चार बरसाती सीजन में एंटीडेंगू मच्छर का प्रयोग किया गया और दावा किया गया कि वहां चार बरसातों में एक भी डेंगू का मामला सामने नहीं आया।

दरअसल वैज्ञानिकों ने इन मंच्छर में एक बैक्टिरिया वोल्वाशिया पापीएंटिस डाला गया है। वैज्ञानिकों का दावा है कि इससे बीमारी वाले मच्छरों को वायरस फैलाने से रोकने में सफल होंगे। अब तक के परीक्षणों में यह खरे भी उतरे हैं। डेंगू की भयावहता को इसी से समझा जा सकता है कि 16 मई को भारत में राष्ट्रीय डेंगू दिवस मनाया जाने लगा है। इस दिवस के आयोजन के माध्यम से लोगों में अवेयरनेस जागृत की जाती है। दरअसल डेंगू एडीज एजिप्टी प्रजाती की मादा मच्छर के कारण तेजी से फैलता है। हांलाकि यह सक्रामक नहीं है पर प्रभावित व्यक्ति से मच्छरों के माध्यम से फैलने की संभावना रहती है। बरसात के दिनों में यह मच्छर तेजी से फैलता है। जमा पानी और गंदगी आदि में डेंगू मच्छर तेजी से बढ़ते हैं। जुलाई से सितंबर, अक्टूबर तक डेंगू का प्रकोप अधिक रहता है। खास यह कि शुरुआती दो तीन दिन तक तो जांच में पता ही नहीं चलता है। माना यह जाता है कि डेंगू में 3 से 7 दिन अधिक गंभीर होते हैं। प्लेटरेट्स में तेजी से गिरावट होती है। हांलाकि डेंगू के कारण मौत तुलनात्मक रुप से कम है पर डेंगू का प्रभाव क्षेत्र लगातार बढ़ रहा है। ऐसे में एंटीडेंगू मच्छर शुभ संकेत माने जा सकते हैं।

एक मोटे अनुमान के अनुसार दुनिया के 129 देशों या यों कहें कि दुनिया की आधी आबादी क्षेत्र में डेंगू अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुका है। देष दुनिया की सरकारों और विश्व स्वास्थ्य संगठन के सामने डेंगू बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। दरअसल डेंगू की गंभीरता को देखते हुए ही गैर सरकारी वर्ल्ड मास्कीटों प्रोग्राम के तहत एंटीडेंगू मच्छर विकसित किया गया है। 2023 में इंडोनेशिया में इनका प्रयोग किया जा चुका है और इनके प्रभाव से 95 प्रतिशत तक सकारात्मक प्रभाव देखा गया है।

यदि विश्व स्वास्थ्य संगठन की पिछले साल जारी रिपोर्ट अतिशयोक्तिपूर्ण माने तब भी इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती कि डेंगू आज और आने वाले समय के लिए दुनिया के देशों के लिए गंभीर समस्या बनता जा रहा है। दुनिया के 129 देष डेंगू की गिरफ्त में आ चुके हैं तो इससे भी मतभेद नहीं हो सकता कि दुनिया के देशों में होने वाली बीमारियों में से 70 फीसदी बीमारी का केन्द्र एशिया महाद्वीप बना हुआ है। डेंगू दिन दूनी रात चौगुनी रफ्तार से दुनिया के देशों को अपनी गिरफ्त में लेता जा रहा है। ड्ब्लूएचओ की ही माने तो आज दुनिया की आधी अबादी डेंगू संभावित क्षेत्र के दायरें में आ गई है। डेंगू की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि गत साल पेरु के अधिकांश इलाकों में डेंगू के कारण इमरजेंसी लगाई जा चुकी है तो अमेरिका जैसा विकसित देश भी इसके दायरें से बाहर नहीं है। अमेरिका, अफ्रीका, एशिया के 100 से ज्यादा देश सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों में हैं। दरअसल डेंगू एडीज प्रजाति के मच्छर से फैलता है। डेंगू के मच्छर के बारे में यह माना जाता है कि नमी बाले क्षेत्र खासतौर से पानी एकत्रित होने वाले स्थानों पर यह तेजी से फैलता है। सुबह के समय यह अधिक सक्रिय रहता है। यह भी माना जाता है कि डेंगू होने का दो तीन दिन के बुखार में जांच के दौरान तो पता ही नहीं चलता वहीं तीन चार दिन तक लगातार बुखार के बाद जांच कराने पर डेंगू का पता चलता है। यह भी सही है कि डेंगू से प्रभावित लोग एक से दो सप्ताह में ठीक भी हो जाते हैं। पर कमजोर इम्यूनिटी वाले या डेंगू के गंभीर होने की स्थिति में तेजी से प्लेटरेट्स कम होने लगती हैं और यहां तक कि शरीर के दूसरे ओरगन्स को प्रभावित कर मौत का कारण भी बन जाते है।

देश दुनिया के लोगों को कोरोना ने बहुत कुछ सिखाया है। घर की चार दीवारी में कैद होने से लेकर सब कुछ बंद होने के हालातों से दो चार हो चुके हैं। अपनों को अपने सामने ही जाते हुए देखा है तो प्लेग को छोड़ दिया जाये तो संभवत: यह पहला मौका होगा जब सब कुछ चाहते हुए भी कोरोना काल में अपनों को अंतिम विदाई तक भी सही ढंग से दे नही पाये हैं। कोरोना की त्रासदी से अभी उभर भी नहीं पाये कि जानलेवा बीमारियों के नित नए वेरियंट सामने आ रहे हैं। इनके पीछे पिछड़ों देशों के सामने गरीबी एक कारण है तो दूसरी और जलवायु परिवर्तन के कारण डेंगू जैसे रोग तेजी से फैल रहे हैं। अत्यधिक बारिश, बाढ़, अत्यधिक गर्मी, अत्यधिक सर्दी यहां तक की बेमौसम की बरसात जैसे हालात और आए दिन आने वाले समुद्री तूफान चिंता के कारण बनते जा रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की हालिया रिपोर्ट के अनुसार दुनिया के चार अरब लोग डेंगू संभावित क्षेत्र में है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के वैश्विक कार्यक्रम प्रमुख डॉ. रमन वेलायुधन का मानना है कि 2000 की तुलना में 2022 तक डेंगू से प्रभावित लोगों का आंकड़े में आठ गुणा तक की बढ़ोतरी हो चुकी है। यदि हम हमारे देश भारत की ही बात करें तो 2018 में 101192 मामलें सामने आये थे वहीं 2023 में नवंबर तक डेंगू के 234427 मामले सामने आएं। यदि 2020 के साल को छोड़ दिया जाए तो भारत में डेंगू के मामलें लगातार बढ़ ही रह हैं। कमोबेस यही हालात दुनिया के दूसरे देशों में देखने को मिल रहा है।

आशा की जानी चाहिए कि विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जल्दी ही एंटी डेंगू मच्छर छोड़े जाने के औपचारिक दिशा निर्देश जारी कर दिए जाएंगे। मच्छर जनित रोगों में जिस तेजी से डेंगू ने पांव पसारें हैं उससे बचाव के लिए एंटीडेंगू मच्छर का सफल प्रयोग आने वाले दिनों में राहत भरा होगा। डेंगू के ईलाज और बचाव पर अरबों रुपये की व्यय होने वाली राशि में से कुछ राशि का उपयोग यदि एंटीडेंगू मच्छर तैयार कर उन्हें फैलाने और रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने में किया जाना चाहिए। देश में 16 मई को मनाये जाने वाला एंटी डेंगू डे भी अधिक जोर शोर से मनाने के साथ ही जन जागरुकता के लिए व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए ताकि डेंगू जैसे तेजी से बढ़ रही बीमारी से राहत मिल सके।

- अतिथि सम्पादक
डॉ. राजेन्द प्रसाद शर्मा

"मकर संक्रांति सूर्य संवत्सर का सबसे पावन महत्वपूर्ण दिन"

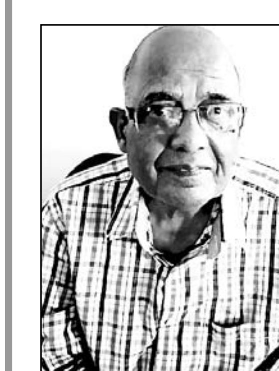

डॉ. जे. के. गर्ग

सूर्य को भारत के ऋषि मुनियों ने निर्विवाद रूप सेजड चेतन की आत्मा माना है। भारतीय काल चक्र सूर्य की गति के मुताबिक ही चलता है। सूर्य का संक्रमन लगातार काल प्रवाह का परिचायक है। भारत में सोर संवत्सर को राष्ट्रिय मान्यता प्रदान की गई है वहीं सोर संवत्सर का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण दिन मकर संक्रान्ति को माना गया है। संक्रांति का मतलब है सूर्य का एक राशी से दुसरी राशी में गमन करना। मकर संक्रांति के दिन सूर्य धनु राशि को छोड़ मकर राशि के अंदर प्रवेश करता है। इसी वजह से इस संक्रांति को मकर संक्रांति के नाम से जाना जाता है। पौराणिक मान्यताओं के मुताबिक इस दिन सूर्य अपने पुत्र शनि की राशि में प्रवेश करते हैं, वैसे तो ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सूर्य व शनि में शत्रुता बताई गई है

लेकिन इस दिन पिता सूर्यस्वयं अपने पुत्र शनि के घर जाते हैं तो इस दिन को पिता पुत्र के तालमेल और प्रेम मिलाप के दिन और पिता पुत्र में नए संबंधों की शुरुआत के दिन के रूप में भी देखा गया है। पुराणों के अनुसार भगवान राम के पूर्वज एवं मां गंगा को धरती पर लाने वाले राजा भगीरथ ने इसी दिन अपने पूर्वजों का तिल से तर्पण किया था और तर्पण के बाद गंगा इसी दिन सागर में समा गई थी और इसलिए इस दिन गंगासागर में मकर संक्रांति के दिन विशाल धार्मिक मेला भरता है। मकर संक्रान्ति के पावन दिन पर लाखों नर नारी गंगासागर में स्नान करके पुण्य लाभ प्राप्त करते हैं।मकर संक्रांति के दिन ही दिन भगवान विष्णु ने असुरों का संहार करके असुरों के सिर को मंदार पर्वत पर दबा कर युद्ध समाप्ति की घोषणा कर दी थी। इसलिए मकर संक्रांति को बुराई पर अच्छाइयों और असत्य पर सत्य के रूप में मनाते हैं। मकर संक्रांति को नकारात्मकता को समाप्त कर सकारात्मक ऊर्जा की शुरुआत के रूप में भी मनाया जाता है। इस साल मकर संक्रांति 14 और 15 जनवरी को मनाई जाएगी। सोर संवत्सर में मकर संक्रांति में सूर्य के दक्षिणायन से उत्तरायण तक का सफर अत्यंत महत्वपूर्ण है। मान्यता के मुताबिक सनातन धर्मी हिन्दू सूर्य के उत्तरायण काल में ही शुभ कार्य करते हैं। सूर्य जब मकर, कुंभ, वृष, मीन, मेष और मिथुन राशि में रहता है तब इसे उत्तरायण कहते हैं। वहीं, जब सूर्य बाकी राशियों सिंह, कन्या, कर्क, तुला, वृश्चिक और धनु राशि में रहता है, तब इसे दक्षिणायन कहते हैं। शास्त्रों के अनुसार उत्तरायण देवताओं का दिन तथा दक्षिणायन देवताओं की रात होती है। जितने समय में पृथ्वी सूर्य के चारों ओर एक चक्कर लगाती है उसी अवधि को सौर वर्ष कहते हैं। पृथ्वी का गोलाई में सूर्य के चारों ओर घूमना क्रान्ति चक्र कहलाता है। इस परिधि चक्र को बाँटकर बारह राशियाँ बनी हैं। सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करना संक्रान्ति कहलाता है। मकर संक्रांति के दिन यज्ञ में दिया हव्य को ग्रहण करने के लिए देवता धरती पर अवतरित होते हैं। मकर संक्रांति का त्यौहार सम्पूर्ण सृष्टि के लिए ऊर्जा के स्त्रोत भगवान सूर्य की आराधना के रूप में मनाया जाता है। उत्तरायण में इसी मार्ग से पुण्यात्माएँ शरीर छोड़कर स्वर्ग आदि लोकों में प्रवेश करती हैं। सनातन धर्म की मान्यताओं के मुताबिक इस दिन पुण्य, दान, जप तथा धार्मिक अनुष्ठानों का अत्याधिक महत्त्व है और इस दिन किये गये दान पुन्य से उन्हें सौ गुणा ज्यादा फल प्राप्त होता है। ऐसा माना जाता है कि सूर्य के उत्तरायण में आने पर सूर्य की किरणें पृथ्वी पर पूरी तरह से पड़ती है और यह प्रथ्वी प्रकाशमय हो जाती है। वैज्ञानिकों के अनुसार 21-22 दिसंबर केआसपास से ही दिन का बढ़ना शुरू होता हैं। इसलिए वास्तविक शीतकालीन संक्रांति 21 दिसंबर या 22 दिसंबर जब उष्णकटिबंधीय रवि मकर राशि में प्रवेश करती है इसलिए वास्तविक उत्तरायण 21 दिसंबर कोहोता है। यही मकर संक्रांति की वास्तविक तारीख भी थी। एक हजार साल पहले मकर संक्रांति 31 दिसंबर को मनाया गया था वर्तमान समय में साधारणतया 14 जनवरी को मकर संक्रांति मनाई जाती है। वैज्ञानिक गणनाओं के अनुसार पांच हजार साल बाद मकर संक्रांति का पर्व फरवरी के अंत तक हो सकता है, जबकि 9000 वर्षों बाद में यह जून में आ जाएगा।

खगोलीय अवधारणा के मुताबिक सूर्य के धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करनेको मकर संक्रांति कहा जाता है। दरअसल हर साल सूर्य का धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश 20 मिनट की देरी से होता है। इस तरह हर तीन साल के बाद सूर्य एक घंटे बाद और हर 72 साल एक दिन की देरी से मकर राशि में प्रवेश करता है। इस तरह 2080 के बाद मकर संक्रांति 16 जनवरी को पड़ेगी। इसी संदर्भ यह उल्लेखनीय है कि राजा हर्षवर्धन के समय में यह पर्व 24 दिसंबर को पड़ा था। मुगल बादशाह अकबर के शासन काल में 10 जनवरी को मकरसंक्रांति थी। शिवाजी के जीवन काल में यह त्योहार 11 जनवरी कोपड़ा था। मकर संक्रांति के दिन भारत के प्रमुख तीर्थ स्थलों यथा प्रयाग, हरिद्वार, वाराणसी, कुरुक्षेत्र, गंगासागर पुष्कर आदि में पवित्र नदियों गंगा, यमुना आदि में करोडों लोग डुबकी लगा कर स्नान करते हैं। ऐसा माना जाता है कि वरुण देवता इन दिनों में यहां आते हैं। यह भी माना जाता है कि उत्तरायण में देवता मनुष्य द्वारा किए गए हवन,यज्ञ आदि को शीघ्रता से ग्रहण करते हैं। अथर्ववेद में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि दीर्घायु और स्वस्थ रहने के लिए सूर्योदय से पूर्व ही स्नान शुभ होता है। ऋग्वेद में ऐसा लिखा है कि है सूर्योदय से पूर्व ही स्नान करने से भास्कर देव हमारे वात, पित्त और कफ से पैदा होने वाले रोगों को समाप्त करते हैं। मकर संक्रांति माघ माह में आती है। संस्कृत मेंमघ शब्द से माघ निकला है। मघ शब्द का अर्थ होता है धन,सोना-चांदी,कपड़ा,आभूषण आदिइसलिए इन वस्तुओं के दान आदि के लिए ही माघ माह उपयुक्त है। ईसी वजह से मकर संक्रांति को माघी संक्रांति भी कहते है। मकर संक्रांति को देश में कई अन्य नामों से भी जाना जाता है जैसे तिल संक्रांति, खिचड़ी संक्रांति एवं माघ संक्रांति। खेतों में गेहूं और धान की लहलहाती फसल किसानों की मेहनत का परिणाम होती है लेकिन यह सब ईश्वर और प्रकृति के आशीर्वाद से संभव होता है।मकर संक्रांति से प्राप्त सुखी जीवन के नुस्खेमकर संक्रान्ति का पर्व हमे अपनी जिन्दगी को सुखी और खुशहाल बनाने के बारे में अप्रत्यक्ष रूप के अंदर अनेको सीख भी देता है। सूर्य आकाशमें बहुत ऊँचाई पर है इसीलिये हमे भी जीवन के अंदर कुछ बड़ा काम करने के लिये हमकोऊची और बड़ी सोच रखनी होगी। सूर्य कीरोशनी से प्राप्त उजाला हमको सीख देता है कि ज्ञान से प्राप्त की गई सोच से हमारी सोच के अंदर स्पष्ट नजरिया उत्पन्न होता है जो हमें सफलता दिलाता है। संक्रांति के बाद मौसम मे बदलाव आता है और हमारे खान पान मे भी हम बदलाव करते है इससे सीख मिलती है कि परिस्थिति में आए परिवर्तन के अनुसार हमें अपने अपने को ढाल लेना चाहिये। परिवर्तन को स्वीकार करना लाजमी और फायदेमंद होता है। अपनी लीडरशिप क्षमता को कामयाब बनाने के लिये हमारी बोली में मिठास और विनम्रता का होना जरूरी है। पौराणिक मान्यताओं के मुताबिक मकर संक्रांति के दिन दिन सूर्य अपने पुत्र शनि की राशि में प्रवेश करते हैं, वैसे तो ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सूर्य व शनि में शत्रुता बताई गई है लेकिन इस दिन पिता सूर्य स्वयं अपने पुत्र शनि के घर जाते हैं तो इस दिन को पिता पुत्र के तालमेल और प्रेम मिलाप के दिन के दिन व पिता पुत्र में गुजरे दुश्मनी पूर्ण संबंधों की बजाय नये प्रेममय रिश्तों की शुरुआत होती है। इससे हमको यह सीख मिलती है कि हमें अपने जीवन मे आपसी रिश्तों को मजबूत बनाये रखना चाहिए यही सबसे बड़ी पूंजी होती है। शुभ कामो की शुरुआत करने मे देरी नहीं करें। जीवन के अंदर जीत हार को अनावश्यक महत्व नहीं दें याद रखे एक असफलता दुसरी सफलता का दरवाजे खोलती है। सिर्फ सोचने से कुछ भी प्राप्त नहीं होगा आपको अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिये मेहनत करनी पड़ेगी।

- डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज

कलेक्टर ने हरित संगम पर्यावरण मेले का अवलोकन किया

भीलवाड़ा, (निसं)। जिला कलेक्टर नमित मेहता ने शुक्रवार को अमृता देवी पर्यावरण नागरिक (अपना) संस्थान एवं नगर परिषद भीलवाड़ा के संयुक्त तत्वावधान में पर्यावरण संरक्षण गतिविधि की अखिल भारतीय योजना के अंतर्गत चित्रकूट धाम में आयोजित पांच दिवसीय हरित संगम पर्यावरण मेले का अवलोकन किया।

जिला कलेक्टर ने मेले में प्लांट लवर सोसाइटी द्वारा लगाई गई विभिन्न प्रजातियों के दस हजार से अधिक पुष्पों की प्रदर्शनी देखकर अपनी प्रसन्नता जताई। इस दौरान नगर परिषद सभापति राकेश पाठक, जिला पुलिस अधीक्षक श्याम सिंह सहित अपना संस्थान के पदाधिकारी व अन्य अधिकारी मौजूद रहे। उन्होंने मेले में पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए लगाई लगी विभिन्न स्टॉल्स का भी अवलोकन किया।

- **विभिन्न प्रजातियों के पुष्पों की प्रदर्शनी देखकर कलेक्टर ने प्रसन्नता जताई**
- **'पर्यावरण के प्रति इस मुहिम को जिले के अन्य क्षेत्रों तक पहुंचाया जाएगा'**

मेहता ने कहा कि जिले में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जिलेवासी प्रतिबद्ध है। जिला कलेक्टर ने कहा कि फ्लावर्स प्रदर्शनी को देख उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। इसके लिए उन्होंने आयोजकों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि पर्यावरण के प्रति इस मुहिम को जिले के अन्य क्षेत्रों तक पहुंचाया जाएगा तथा जिले का सौंदर्यीकरण का कार्य किया जाएगा।

जिला कलेक्टर नमित मेहता ने हरित संगम पर्यावरण मेले का अवलोकन किया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 13 जनवरी 2024

पौष मास शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, विक्रम सम्वत 2080, श्रवण नक्षत्र दिन 12.44 तक, व्रजयोग दिन 10.13 तक, कौलव कतरण दिन 11.11 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 4.35 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति - सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मकर मंगल-धनु, बुध-धनु, गुरु-मेष, शुक्र-वृश्चिक, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में संचार करेगा।

आज रज्जब मास आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघडिया - शुभ 8.40 से 9.58 तक, चर - 12.35 से 1.54 तक, लाभ-अमृत 1.54 से 4.31 तक।

राहुकाल - 9.00 से 10.30 तक, सूर्योदय 7.22 सूर्यास्त 5.49

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। कार्य शीघ्रता-सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

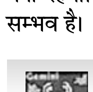

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। शुभ कार्य के लिए यात्रा सम्भव है।

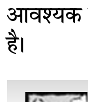

मिथुन
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। परिवार में वाद-विवाद बड सकते हैं। आज आवश्यक कार्यों में विलंब हो सकता है।

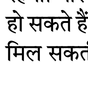

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक सुविधाएं बडेगी। नौकरी पैशा व्यक्तियों को भाग-दौड से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

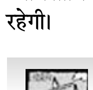

कन्या
घर-परिवार में अथितियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

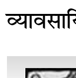

तुला
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बडेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिलेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

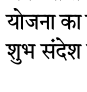

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

धनु
व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। आज व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

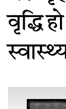

कुंभ
मन में असंतोष और भय बना रहेगा। अर्नगल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

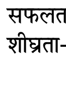

मीन
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता-सुगमता से बनने लगेंगे।

वर्क फ्रॉम होम बनाम वर्क फ्रॉम ऑफिस

अविनाश जोशी

घर से काम करने कि संस्कृति ने विश्व को एक नई जीवन शैली एवं दैनिक कार्य प्रणाली में आमूल चूल परिवर्तन की सहूलियत प्रदान की। हर प्राणी ने अपनी जिंदगी को जीने के नए नए तरीके निकाल लिए। भारतीय परिवार व्यवस्था को प्रारंभ में यह व्यवस्था खूब पसंद आई लेकिन धीरे धीरे वर्क लाइफ बैलेंस की दिक्कत जीवन शैली एवं दिनचर्या को बिगाड़ने लगी। कुछ लोग घर में काम करके समय की अव्यवस्था के कारण चिंतित और तनावग्रस्त होने लगे कुछ लोगों के लिए घर में काम करना उनके प्रदर्शन को प्रभावित करने का जरिया बन गया। इन फायदों और नुकसानों को ध्यान में रखते हुए, एक व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत स्थिति, काम के प्रकार और परिवार से संबंधित फैसले लेने की जरूरत होती है। वैसे अगर देखा जाए तो अधिक फ्लेक्सिबिलिटी के कारण काम-जीवन संतुलन सुधरता है। कार्यालय के संभावित दिक्कतों से बचने में भी मदद मिलती है।

कोरोना महामारी के समय, भारत में वर्क फ्रॉम होम का प्रचलन बहुत तेजी से बढ़ गया था। लेकिन आज यह मुख्यधारा का एक हिस्सा बन चुकी है। देश ने 2020 में मार्च माह से लॉकडाउन लगा दिया था, जिससे कई कंपनियां और सरकारी विभाग अपने कर्मचारियों को घर से काम करने के लिए आदेश दिए थे। कोरोना के दौरान वर्क फ्रॉम होम के कुछ महत्वपूर्ण फायदे थे, जिनमें स्वास्थ्य और सुरक्षा की देखभाल, यातायात की रोकथाम, और सामाजिक दूरी के लिए एक सुरक्षित विकल्प शामिल था। यह न केवल कर्मचारियों के लिए सुरक्षित रहने का माध्यम था, बल्कि कंपनियों ने भी इसे अपनाकर कार्यकर्ताओं की उत्पादकता बनाए रखने का प्रयास किया। यह मॉडल एक बेहद महत्वपूर्ण मॉडल के तौर पे अत्यंत सफल रहा। शुरुआत में, घर से काम बहुत मुश्किल था क्योंकि हम इससे परिचित नहीं थे। फोन पर समन्वय स्थापित करना चुनौतीपूर्ण था लेकिन अंततः हमने इसे स्वीकार कर लिया।

कोरोना के समय वर्क फ्रॉम होम के दौरान कुछ चुनौतियां भी थीं, जैसे कि वर्क लाइफ बेलेंस , दूरस्थ काम करते समय लापरवाही का सामना करना, और टेक्नोलॉजी का सम्पूर्ण ज्ञान साथ में नए नए गेजेट्स एवम सॉफ्टवेयर्स को प्रयोग करने के लिए ट्रेनिंग एवम जानकारी प्राप्त करना। कोरोना के समय वर्क फ्रॉम होम ने एक नया अध्याय खोला और कई लोगों ने इसके लाभ उठाए। हालांकि, यह सभी कंपनियों और व्यक्तियों के लिए समान रूप से सफल नहीं रहा, क्योंकि व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक परिस्थितियों का अंतर होता है। वर्तमान में भारत में वर्क फ्रॉम होम की लोकप्रियता में बड़ी वृद्धि हुई। वैश्विक स्वास्थ्य संकट के कारण, भारत सरकार ने लॉकडाउन और सामाजिक दूरी के प्रतिबंध के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाले लोगों के लिए वर्क फ्रॉम होम को बढ़ावा दिया। वर्क फ्रॉम होम संस्कृति से समय और यातायात की बचत का बड़ा महत्व है घर से काम करके यातायात में बचत होती है जिससे समय और धन की बचत होती है। काम करने का घर पर ही काम करने से काम करने के माहौल में आराम मिलता है जो काम के प्रदर्शन को सुधारता है। घर से काम करने से परिवार और काम के बीच सही संतुलन बना रहता है। घर से काम करने से यातायात और दफ्तर के शोर-शराबे से राहत मिलती है।

अगर वर्क फ्रॉम होम नियमित जिंदगी का हिस्सा बन जाए तो शारीरिक स्वास्थ्य के लिए लंबे समय तक बैठे रहने से समस्याएं हो सकती हैं। सामाजिक इंटरैक्शन की कमी हो सकती है, जो आक्रोश, अकेलापन, या तनाव का कारण बन सकती है। काम की विशेषताएं और अवसरों का अभाव हो सकता है। घर में काम करते समय व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन के बीच सीमा समझदारी की आवश्यकता होती है। यहा पर ध्यान देने कि बात यह है की वर्क फ्रॉम होम के फायदे और नुकसान व्यक्तिगत अनुभव और संस्थानाधीन काम की विशेषताओं पर निर्भर कर सकते हैं। इसलिए, यह आपके पसंद और समस्याओं के अनुसार भिन्न हो सकते हैं।

वर्क फ्रॉम होम करने से, कर्मचारियों को ऑफिस में सामाजिक संपर्क करने का अवसर कम हो सकता है, जिससे टीम सहयोग और समन्वय में असुविधा हो सकती है। कुछ कर्मचारियों को ऑफिस में विशेष उपकरणों और संसाधनों का लाभ नहीं मिलता, जो उनकी कार्य की गुणवत्ता और कार्य परिणाम पर असर डाल सकता है। कुछ लोग वर्क फ्रॉम होम करते समय घर के कारण तनाव महसूस कर सकते हैं और कार्य पर लक्षितता में कमी हो सकती है।

वर्क फ्रॉम होम का प्रारंभ द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जर्मनी में किया गया था। इसके बाद, अमेरिका में भी इसका प्रचलन बढ़ा और 1970 से यहा भी इसका प्रचलन आम हो गया। हालांकि, इसका बढ़ता हुआ प्रयोग और प्रसार आमतौर पर 2010 के दशक में होने लगा था। और फिर कोविड-19 महामारी के समय जब लॉकडाउन लगाया गया, वर्क फ्रॉम होम का अनुप्रयोग व्यापक रूप से बढ़ गया था और इसे एक नई राह मिली। वर्क फ्रॉम होम की प्रारंभिक अवधि का निर्धारण थोड़ा मुश्किल है क्योंकि यह विभिन्न कंपनियों और स्थानों के लिए अलग-अलग रूप से शुरू हुआ था। लेकिन, वर्क फ्रॉम होम का प्रचलन तेजी से बढ़ा है जब से कंप्यूटर, इंटरनेट और टेलीकम्यूनिकेशन के तकनीकी उन्नितयों ने दूरस्थ काम करने को संभव बनाया। वर्क फ्रॉम होम का अधिकांश प्रचलन और उपयोग 21वीं सदी के प्रारंभ में शुरू होने का अनुमान है। विशेष रूप से टेक्नोलॉजी, बैंकिंग, आउटसोर्सिंग और आईटी उद्योगों में वर्क फ्रॉम होम का प्रचलन देखने को मिलता है। जिसमें विभिन्न कंपनियों ने कर्मियों को गृह से काम करने की अनुमति देनी शुरू की।कोरोना महामारी के समय, भारत में वर्क फ्रॉम होम का प्रचलन बहुत तेजी से बढ़ गया था। देश ने 2020 में मार्च माह से लॉकडाउन लगा दिया था, जिससे कई कंपनियां और सरकारी विभाग अपने कर्मचारियों को घर से काम करने के लिए आदेश दिए थे।

कोरोना के दौरान वर्क फ्रॉम होम के कुछ महत्वपूर्ण फायदे शामिल थे, जिनमें स्वास्थ्य और सुरक्षा की देखभाल, यातायात की रोकथाम, और सामाजिक दूरी के लिए एक सुरक्षित विकल्प शामिल था। यह न केवल कर्मचारियों के लिए सुरक्षित रहने का माध्यम था, बल्कि कंपनियों ने भी इसे अपनाकर कार्यकर्ताओं की उत्पादकता बनाए रखने का प्रयास किया।

कोरोना के समय वर्क फ्रॉम होम के दौरान कुछ चुनौतियां भी थीं, जैसे कि काम-जीवन संतुलन में कठिनाइयां, दूरस्थ काम करते समय लापरवाही का सामना करना, और टेक्नोलॉजी की उपलब्धियों और सुरक्षा के लिए नई नीतियों का पालन करना। लोग अब जूम कॉल्स, वीपीएन, एनीडेस्क जैसी तकनीकों से अवगत हुए हैं। इससे हम घरों में बैठकर काम कर पाते हैं। इन्होंने हमें भविष्य में भी घरों में रहकर काम करने की सुविधा प्रदान की है।

लॉकडाउन पूरी तरह हटने के बाद विश्व में हाइब्रिड मोड का प्रचलन आम हो गया है। जिसमें हम सप्ताह में दो दिन कार्यालय जाएंगे और अन्य दिनों में घर से काम करेंगे। इससे हमें दफ्तर की जगह का किराया बचाने में भी मदद मिलेगी। इस अवधारणा से कर्मचारियों को स्थाई रूप से राहत महसूस हो रही है। वैसे अब हम दुनिया के किसी भी कोने से कर्मचारी को नियुक्त कर सकते हैं। अब हमारे सामने कार्यस्थल पर उपस्थित होने और उसी शहर में निवास जैसी बाधा नहीं है। नया साल प्रारंभ हो गया हैं वहीं पुराना साल काफी कुछ देकर गया। कई यादों के साथ ही इस बीते हुए साल ने लोगों की जीवनशैली में बड़ा बदलाव किया। साल 2023 के अंत तक एक बार फिर कोरोना के संभावित खतरे और संक्रमण के बारे में दबी जुबान से बाते होनी चालू हो गई है। पूर्व में लॉकडाउन और पाबंदियों के कारण कार्यालयों में वर्क फ्रॉम होम कल्चर आया। कर्मचारियों ने ऑफिस जाना छोड़ कर घर से ही काम करना शुरू किया। कोरोना संकट के बीच वर्क फ्रॉम होम कल्चर ने लोगों के जीवन में बड़ा बदलाव किया। लोगों का आदतें और दिनचर्या काफी हद तक बदल गई। खानपान से लेकर रहन सहन के तौर-तरीकों ने कार्यशैली को बदला। एक बार फिर एहतियात के तौर पे वर्क फ्रॉम संस्कृति अपना के हम कोरोना के संभावित संक्रमण से बच सकते है।

- अविनाश जोशी,
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक।